Department of Economics

L.N.D. COLLEGE, MOTIHARI (BIHAR)

(a constitueant unit of B.R.A. University, Muzaffarpur (Bihar)

NAAC Accredited 'B+'

Topic : भारत में श्रम बाजार [LABOUR MARKET IN INDIA]

BA Economics Part I MJC/MIC/MDC (Semester I)

Instructor

Dr. Ram Prawesh

Guest Faculty (Department of Economics)

L.N.D. COLLEGE, MOTIHARI (BIHAR)

भारत में श्रम बाजार [LABOUR MARKET IN INDIA]

जैसा कि हम अध्ययन कर चुके हैं कि श्रम बाजार के अध्ययन में श्रम बाजार के व्यावसायिक एवं औद्योगिक बँटवारे का विश्लेषण किया जाता है। किसी देश में रोजगार पद्धति वहाँ के श्रम बाजार की संरचना बताती है।

भारत में श्रम बाजार की विशेषताएँ (CHARACTERISTICS OF LABOUR MARKET IN INDIA) -

भारतीय श्रम बाजार अधिकांश विकसित देशों के श्रम के बाजार से भिन्न है। भारतीय श्रम बाजार की कुछ प्रमुख विशेषताएँ पूर्व अध्याय में वर्णित की गयी श्रम बाजार की विशेषताओं के अतिरिक्त निम्नलिखित हैं-

(1) कृषि श्रमिकों का अन्तरण (Migration of Agriculture Labour) - भारतीय अर्थव्यवस्था के विभिन्न क्षेत्रों (कृषि एवं गैर-कृषि क्षेत्र) में अर्द्धबेरोजगारी व छिपी हुई बेरोजगारी की समस्या गम्भीर है। अतः भारत के आधुनिक क्षेत्र अर्थात् शहरी संगठित उद्योगों में श्रमिकों की पूर्ति का मुख्य स्रोत कृषि क्षेत्र ही रहा है, यद्यपि विगत वर्षों में एक शहरी औद्योगिक श्रम शक्ति का भी देश में विकास हुआ है। अतः भारतीय अर्थव्यवस्था के संदर्भ में गैर-कृषि श्रमिकों की समस्याओं को कृषि श्रमिकों की समस्याओं से पूरी तरह से अलग नहीं किया जा सकता है।

(1) कुशल और प्रशिक्षित श्रमिकों का अभाव (Shortage of Skilled and Trained Workers) - भारत जैसे अर्द्धविकसित देशों में श्रम बाजार में कुशल और प्रशिक्षित श्रमिकों की संख्या उनकी माँग की तुलना में कम रहती है, जिसके कारण अर्थव्यवस्था के आर्थिक विकास में गतिरोध उत्पन्न हो जाता है। (2) युवा श्रमिक (Young Workers) - अर्द्धविकसित देशों के श्रम बाजार में अधिकांश श्रमिक नीचे आयु वर्गों के होते हैं। इसका मुख्य कारण यहाँ के लोगों की औसत जीवन आयु का कम होना है। फलत: एक ओर तो अर्थव्यवस्था को अनुभवी श्रमिकों का लाभ नहीं मिल पाता और दूसरी ओर युवा श्रमिकों पर सरकार को शिक्षा, प्रशिक्षण, चिकित्सा सम्बन्धी देख-रेख आदि में राष्ट्र को सामाजिक निवेश (Social investment) अधिक करने की आवश्यकता होती है। सम्भव है कि ऐसा निवेश 'अधिक निवेश' में कमी करके किया जा रहा हो जो आर्थिक विकास के लिए हानिप्रद होगा।

(3) विशाल बाजार (Wide Market) - श्रम की पूर्ति की दृष्टि से भारतीय श्रम का बाजार विश्व में चीन के बाद सबसे बड़ा है। 110 करोड़ के इस विशाल देश में अपार जनशक्ति है। भारत में जनसंख्या की अधिकता के अतिरिक्त निर्धनता के कारण भी न केवल श्रमिकों की संख्या अधिक है बल्कि अपने जीवन-निर्वाह के लिए बच्चों और स्त्रियों को भी काम करने के लिए बाध्य होना पड़ता है। श्रम की विशालता के कारण यहाँ श्रम की पूर्ति श्रम की माँग से अधिक रहती है। फलत: मजदूरी की दरें नीची रहती हैं।

(4) आकस्मिक श्रमिक (Casual Labour) - भारतीय श्रम बाजार की एक अन्य महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि यहाँ निर्माणी उद्योगों तक में आकस्मिक श्रमिक पाये जाते हैं, जिसके कारण सेवायोजकों और श्रमिकों के बीच एक स्थायी सम्बन्ध नहीं बन पाता है। इसका कारण यह है कि आकस्मिक श्रमिकों की दशा में एक ही श्रमिक किसी काम पर किसी लम्बे समय के लिए कार्य नहीं करता।

(5) अस्थायी प्रकृति (Casual Nature)- भारत में आधुनिक उद्योगों में भी श्रमिक बड़ी संख्या में अस्थायी होते हैं। व्यावसायिक दृष्टि से श्रमिक औद्योगिक कार्य के लिए स्थायी रूप से तैयार नहीं होते।

(6) गतिशीलता की कमी (Lack of Mobility) - भारतीय श्रम बाजार में श्रमिकों की गतिशीलता में कमी पायी जाती है अर्थात् वह एक स्थान से दूसरे स्थान को सरलता से नहीं जाता है। इसका कारण निर्धनता, यातायात के साधनों का अभाव के साथ-साथ भारतीय श्रमिक प्रकृति से ही घर पर रहना अधिक पसन्द करता है। (7) नियन्त्रण का अभाव (Lack of Control) - भारतीय श्रम बाजार में नियन्त्रण का अभाव है। संगठित उद्योगों में कुछ नियम हैं। उदाहरण के लिए, मजदूरी के भुगतान, क्षतिपूर्ति, सामाजिक सुरक्षा (Social Security) आदि से सम्बन्धित नियम बनाये गये हैं परन्तु देश की अधिकांश श्रम शक्ति अभी भी नियमों के क्षेत्र से बाहर हैं। उदाहरण के लिए, खेतिहर मजदूरों में नियम नहीं के बराबर हैं।